गोभी वर्गीय फसलों के प्रमुख कीट व रोकथाम

अरविन्द कुमार (शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग,
डॉ. पंकज कुमार (सहायक–प्राध्यापक) कीट विज्ञान विभाग,
प्रदीप कुमार पटेल (शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग,
दिजेन्द्र कुमार (शोध छात्र) सब्जी विज्ञान विभाग,
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश–224229,
Email: ak847051@gmail.com

परिचय–

गोभी वर्गीय सब्जियों की फसलों में मुख्य स्थान प्राप्त है। गोभी वर्गीय सब्जी की फसलें भारत में पश्चिम बंगाल उडीसा, असम, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में मुख्य रुप से उगाई जाती हैं। आजकल गोभी वर्गीय सब्जी की फसलों की खेती सर्दियों के मौसम में ही नहीं अपितु गर्मी तथा बरसात के मौसम में भी सफलता पूर्वक की जा रही है। सघन खेती, बेमौसमी उत्पादन एवं वर्ष भर पैदावार लेने से गोभी वर्गीय सब्जी की फसलों में कीटों का प्रकोप भी तेजी से बढ़ा है, जिसके कारण किसानों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। सर्वेक्षणों से प्राप्त जानकारी से पता चला है कि बरसाती गोभी वर्गीय सब्जी की फसलों पर कीड़ों का प्रकोप अत्याधिक होता है। ठंड शुरू होते ही बाजार में गोभी की सब्जियों की आवक शुरू हो जाती है। ठंड भर इसकी खूब मांग रहती है और किसानों को इसकी खेती से बढ़िया मुनाफा भी होता है। लेकिन दूसरी फसलों की तरह गोभी पर कीटों का प्रकोप देखने को मिलता है। यह कीट पूरी की पूरी फसल को चट कर जाते हैं। अगर सही समय पर गोभी की फसल में लगने वाले कीटों की पहचान कर ली जाए तो उनका प्रबंधन भी किया जा सकता है।

–प्रमुख कीट–

हीरक पृष्ठ शलभ (डायमण्ड बैक मौथ)

पहचान व लक्षण–

इस कीट की मादाएं पत्तियों पर हल्के पीले रंग के एकल अण्डे देती हैं। इल्लियां हल्के पीले हरे रंग की होती हैं, वयस्क छोटा व हल्के भूसर रंग का पतंगा होता है। अग्रिम पंखों के दोनों जोड़ों पर हीरे के आकार के तीन हल्के पीले सफेद रंग के धब्बे दिखाई देते हैं, इसीलिए इसको 'हीरक पृष्ठ कहते है। नवजात लार्वे पत्ती के ऊतकों को खुरचकर खाते हैं, परन्तु विकसित लार्वे पत्तियों को काटकर उनमें छेद बना देते हैं। बंदगोभी इस कीट का सबसे पसंदीदा पोषक आहार है।

प्रबंधन–

- हीरक पृष्ठ शलभ कीट के प्रबंधन के लिए बेसिलस थ्रूजायनसिस का 5 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. का 1 मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाइये।

- रोपाई के 10 दिनों के अंतराल पर 4 प्रतिशत नीम के बीजों के पाउडर का छिड़काव करना चाइये।
- गोभी के हीरक पृष्ठ शलभ कीट को प्रबंधन करने के लिए फेरोमोन 5 ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाना चाइये।

- गोभी के हीरक पृष्ठ शलभ कीट के लिए प्रकाश जाल 3 से 4 बल्ब प्रति एकड़ लगायें।
- हीरक पृष्ठ शलभ के नियंत्रण के लिए नोवेल्यूरान 10 ई.सी. का 1 मिली प्रति लीटर की दर से या स्पाइनोसैड 2.5 एस. सी. का 1.2 मिली प्रति लीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. का 0.3 ग्राम प्रति लीटर या साइन्ट्रानिलिप्रोल 10.26 ओडी का 1.2 मिली प्रति लीटर की दर से 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाइये।

तंबाकू की सुंडी–

पहचान व लक्षणः यह सुंडी भूरे व हरे रंग की होती है और इनके शरीर पर गहरी पट्टी होती है। वयस्क भूरे रंग का तथा ऊपरी पंखों पर लहरदार सफेद चिह्न पाये जाते हैं, इनके लार्वा झुण्ड में रहते हैं। लार्वा कालापन लिए हुए धूसर हरे रंग के होते है। यह कीट पत्तियों पर समूहों में अण्डे देता है, जो भूरे रंग के रोमों से ढके होते हैं। प्रारंभ में लार्वा, चमकती लहराती लाइनों के साथ पतला हरे रंग के, झुंड में दिखाई देते हैं। ये पत्ती के हरे पदार्थ को खुर्च कर खाते हैं और बाद की अवस्था मे कोमल पत्तियों पर एपिडर्मिस को छोड़ते हुए पत्तियों को खाते हैं जिससे पत्तियां सफेद पड़ जाती हैं।

प्रबंधन–

- खेत में अधिक पानी भरने से सुप्तावस्था लार्वा बाहर निकल जाते हैं।
- नर पतंगों को आकर्षित करने के लिए फीरोमोनजाल (फीरोडिनएसएल) 15 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग किये जा सकते हैं।

- तम्बाकू की इल्ली के अण्डों और लार्वा को एकत्रित कर के नष्ट कर देंना चाइये।
- वयस्क की निगरानी और इनके झुंडों को फंसाने के लिए 5 प्रति हेक्टेयर की दर से फिरोमान ट्रेप लगाएं।
- एस.एल. एन.पी.वी. को 1012 गुणा 1.5 पी.ओबी. प्रति हेक्टेयर 2.5 किलोग्राम कच्ची चीनी 0.1 प्रतिशत टीपोल प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करना चाइये।
- तम्बाकू की सुंडी के नियंत्रण के लिए प्रारंभिक अवस्था रोपाई के 20 से 25 दिन बाद में नीम के बीज का पेस्ट (एन.एस. के.ई.) 5 प्रतिशत का 10 –15 दिन के अन्तराल पर प्रति पौधा कीट दो से अधिक संख्या होने पर इसका छिड़काव करना चाइये।
- तम्बाकू की इल्ली के नियंत्रण के लिए साईएन्ट्रानीलीप्रोल 10.26 ओ.डी. का 1.2 मिली प्रति लीटर की दर से या कार्बारील 5 डी.पी. का 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 10 से 15 के अन्तराल पर छिड़काव करना चाइये।

माहूँ (चेम्पा)

पहचान व लक्षणः

यह एक छोटा कीट हैं, जो पादप जूँ के रूप में जाना जाता है। यह पौधों की मुलायम पत्तियों, शिखर भाग तथा तने में अपने सुई नुमा मुँह को डालकर रस चूसते रहते हैं। चेम्पा द्वारा पौधों से रस चूसने से उनमें मोजेक वायरस होने से पौधों में वृद्धि कम हो जाती है। यह काला साँवला रस छोड़ते हैं जो संश्लेषक गतिविधि को रोकता है। यह अपना जीवन काल 8 से 10 दिनों में पूरा कर लेते हैं तथा प्रतिदिन छह से दस युवा कीट को जन्म देते हैं। यह अपने जीवन काल में 50 से 100 पीढ़ी को जन्म देते हैं। ये कीट पत्तियों का रस चूस लेते हैं जिसके पौधे छोटे रह जाते हैं और बनने वाले फूलों का आकार छोटा रह जाता है।

प्रबंधन–

- चेंम्पा कीट के नियंत्रण के लिए पौध रोपण के 10 से 15 दिन पश्चात् नीम की निबोली का अर्क 5 प्रतिशत का छिड़काव करना चाइये।
- गोभी वर्गीय सब्जी की फसलों के पंखदार चेपा को फसाने के लिए पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं।

- चेंपा कीट के लिए बंदगोभी की प्रत्येक 25 पंक्तियों के बाद ट्रैप फसल के रूप में सरसों की एक कतार उगाएं।
- फूलगोभी की पछेती फसल में चेपा के नियंत्रण के लिए 75 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से एसिटामाईप्रिड 20 ई.सी. या डायमिथयोएट 30 ई. सी. 650 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

- आवश्यकता पड़ने पर चेंम्पा कीट के नियंत्रण के लिए डाइमेंथोएट 30 ईसी का 1.32 मिली प्रति लीटर या मैलाथियन 50 ई.सी. का 2 मिली प्रति लीटर या एसीटामिप्रिड 20 एस. पी. का 0.15 ग्राम प्रति लीटर या साइन्ट्रानिलिप्रोल 10.26 ओ.डी. का 1.2 मिली प्रति लीटर या फोसालोन 35 ई.सी. का 2 मिली प्रति लीटर की दर से 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाइये।

पत्ता वेबर–

पहचान व लक्षण: इनके वयस्क पत्तियों के निचली सतह पर समूहों में अंडे देते हैं। लार्वा पौधों के प्रारंभिक चरणों में अत्यधिक गम्भीर रूप में आक्रमण करता है तथा बाद में पौधों के अंदर शेष भाग को अंदर ही अन्दर खाता रहता है। जिससे शिखर भाग अवरुद्ध हो जाता है और बंद नहीं बनता।

प्रबंधन–

- खेत की गहरी जुताई करें।
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।
- प्रकोपित पत्ती व अंडे और लार्वा को हाथ से इकट्ठा कर के नष्ट कर देना चाइये।
- कार्बेरिल 4 प्रतिशत या मेलाथियान 0.05 का फसल पर 10 से 15 दिनों के अन्तराल छिड़काव करना चाइये।

गोभी की तितली–

पहचान व लक्षण : गोभी की तितली जिसका वैज्ञानिक नाम है पियरिस ब्रासिका, एक लेपिडोप्टेरन के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह एक पूर्ण तितली है जो गोभी के खेतों को नुकसान पहुंचाती है। यह एक कीट है जो एक अतृप्त शिकारी के रूप में माना जाता है जब यह कैटरपिलर में होता है। यह पत्तियों को अपने भोजन के स्रोत के रूप में उपयोग करता है, इस प्रकार पत्तियों के बिना बागों में पाए जाने वाले गोभी को छोड़ देता है। जब ये कैटरपिलर बड़े होते हैं, वे अपने शरीर के साथ धारियों के साथ हरे रंग में बदल जाते हैं, उनकी पीठ पर कुछ काले चिन्ह के साथ एक हरे पीले रंग की टोन है।

प्रबंधन–

- खेत की गहरी जुताई करें।
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।
- नर पतंगों को आकर्षित करने के लिए फीरोमोनजाल 15 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

- तितली की इल्ली के अण्ड समूहों और लार्वा को एकत्रित कर के नष्ट कर देना चाइये।
- एस.एल. एनपीवी को 1012 गुणा 1.5 पी.ओबी. प्रति हेक्टेयर 2.5 किलोग्राम कच्ची चीनी 0.1 प्रतिशत टीपोल प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
- तितली की इल्ली के नियंत्रण के लिए साईएन्ट्रानीलीप्रोल 10.26 ओडी का 1.2 मिली प्रति लीटर की दर से या कार्बारील 5 डी.पी. का 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।